डोकलाम गतिरोध

साभार : लाइव मिंट
(04 सितंबर, 2017)

तन्वी मदन
(ब्रुकिंग इंस्टीट्यूट में इंडिया प्रोजेक्ट के निदेशक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) के लिए महत्वपूर्ण है।

अभी भी डोकलाम के फैसले के संबंध में बहुत कुछ जानना बाकी हैं, ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें गड़बड़ी की वजह क्या है अभी तक ज्ञात नहीं। इसके व्यापक प्रभाव और लंबी अवधि के प्रभाव सहित कई प्रश्न अभी भी मौजूद हैं। हांलाकि, इसके राजनयिक प्रयास से मिली राहत सराहनीय है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह परिणाम अनिवार्य था, क्योंकि चीन और भारत में संवाद तंत्र, इस तरह की घटनाओं से निपटने का अनुभव और संघर्ष लाभ की तुलना में अधिक नुकसान ही देता है। ऐसे गतिरोध में वृद्धि का जोखिम हमेशा मौजूद होता है। चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने कहा कि उन्हें आशा थी कि भारत से कुछ सबक सीखेंगे। हांलाकि, कुछ सबक कुछ समय के लिए स्पष्ट नहीं हो सकते, लेकिन कुछ को स्पष्ट करने की कोशिश की गयी हैं।

हल: यह भारत के लिए भी काफी महत्वपूर्ण था कि वह अपनी स्थिति को मजबूत बनाये रखे। किसी के लिए भी बीजिंग को कमजोर साबित करना काफी मुश्किल भरा है, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण है। देखा जाये तो चीनी व्यवहार के लिए एक पैटर्न है। सार्वजनिक बोलबाला बढ़ाएं, चुपचाप नए मार्ग की तलाश करें। दूसरा, यह बीजिंग को एक संदेश भेजता है कि नई दिल्ली यथास्थिति को बदलने के एकतरफा प्रयासों को स्वीकार नहीं करेगा। तीसरा, यह पड़ोस, क्षेत्र और विश्व में सरकारों के लिए यह संकेत देता है और यह दर्शाता है कि नई दिल्ली वार्ता के लिए तैयार है।

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में इस टॉपिक से पूछे गए प्रश्न

1. दक्षिण चीन सागर के मामले में, समुद्री भू-भागीय विवाद और बढ़ता हुआ तनाव समस्त क्षेत्र में नौपरिवहन की और ऊपरी उड़ान की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिये समुद्री सुरक्षा की आवश्यकता की अभिपुष्टि करते हैं। इस संदर्भ में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कीजिये। **(2014)**
2. 'मोतियों के हार' (द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स) से आप क्या समझते है? यह भारत को किस प्रकार प्रभावित करता है? इसका सामना करने के लिये भारत द्वारा उठाए गए कदमों की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिए। **(2013)**

संयम: देखा जाये तो चीन ने अपने क्षेत्रीय दावों को मजबूत करने या विस्तार करने के लिए निर्माण का उपयोग किया है और इसके द्वारा अन्य देशों के साथ किये समझौतों और परियोजनाओं के कारण यह और भी आसान हो जाता है। देखा जाये तो दोनों देशों द्वारा किये जा रहे दावों के सन्दर्भ में अमेरिकी राज्य विभाग ने अपने एक आकलन में यह उल्लेख किया था कि यह मुद्दा केवल एक सीमा रेखा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एशिया में दो सबसे अधिक आबादी वाले और संभवत: सबसे शक्तिशाली देशों से और अन्य एशियाई देशों से भी संबंधित है। लेकिन नई दिल्ली इसे अपने तक सीमित रखने के लिए पूरी तरह से सावधान थी और चीनी क्षेत्रीय व्यवहार को सार्वजनिक करने से बचता रह। विपक्षी नेताओं ने भी संयम दिखाया, राजनीति को बाहर रखने और उनके महत्व को प्रदर्शित करते हुए। आलोचकों के दावों के विपरीत, ऐसी संयम भारत को कमजोर नहीं दर्शाती, बल्कि यह भारत के परिपक्वता को दर्शाती है।

क्षमताओं: संकल्प को राजनयिक, सैन्य और अन्य क्षमताओं की आवश्यकता होती है। इस गतिरोध के दौरान चीनी कार्रवाई से पता चलता है कि वह भारत पर दबाव डालने के लिए कई उपकरण-राजनयिक, सैन्य, आर्थिक, कानूनी, बुनियादी ढांचे, संचार-के साधनों का उपयोग करने के लिए तैयार था। हांलाकि, नई दिल्ली भी इसके लिए पहले से ही तैयार था। भारत को चाहिए कि वह अपनी क्षमताओं को व्यापक रूप से जल्द से जल्द बढ़ाये। इसके अलावा, भारत की चीन की रणनीति के लिए सरकार के अंदर और बाहर कई हितधारकों को शामिल करना होगा, चीन के लीवरेज के लिए भारत की असुरक्षा का आकलन करना और चीन के साथ भारत के उत्थान का विस्तार करना होगा।

साझेदारी: साझेदारी माहौल को बदल सकती है जिसमें भारत के विकल्प और तर्कसंगत चीनी व्यवहार भी शामिल है। एक साथी, भूटान, एक प्रमुख अभिनेता के रूप में शामिल था। हम शायद नहीं जानते कि थिम्फू और नई दिल्ली किस तरह समन्वयित है, लेकिन यह स्पष्ट है उन्होंने एक दूसरे का साथ बखूबी दिया है। यह भी स्पष्ट है कि बीजिंग इस रिश्ते पर दबाव डालना चाहता है। भारत को इस साझेदारी को ध्यान में रखते हुए इस संबंध को जारी रखना होगा। जापान और अमेरिका सहित अन्य भागीदारों के संदर्भ में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उन्होंने क्या किया न कि उन्होंने क्या कहा, कुछ पर्यवेक्षकों का मानना है कि भारत ने ही इन देशो को कुछ करने या सार्वजनिक रूप से बयान देने के लिए उकसाया था। तथ्यों पर जाये तो

भारत ने इन भागीदारों से सुरक्षा प्रतिबद्धता की उम्मीद नहीं की थी। भारत को बीजिंग के समान इन भागीदारों और दूसरों के साथ अपनी क्षमताओं को विकसित करने , चीन को संकेत देने और क्षेत्रीय वातावरण को आकार देने के लिए नए उपायों पर ध्यान देना चाहिए।

सीखना: इस गतिरोध ने चीन और इसकी जटिलताओं के बारे में अधिक जानने के महत्व को उजागर किया है। उदाहरण के लिए, भारतीय नीति निर्माताओं को इस स्थिति से अवगत होना चाहिए, क्योंकि इन्हें चीन के साथ अनुभव और 19वीं पार्टी कांग्रेस राष्ट्रपति शी जिनपिंग की नीतियों की समझ है। दोनों देशों के लिए ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) शिखर सम्मेलन लाभ और अवसरों का मार्ग प्रशस्त करेगा।

अंत में, यहां तक कि इस तरह का गतिरोध चीन-भारत संबंधों के विरोधाभासी आयामों की गतिरोध को परिलक्षित करता है, साथ ही यह दोनों देशों के बीच बेहतर संबंधो के महत्व को भी दर्शाता है। ऐसा करना न केवल इस तरह की परिस्थितियों को हल करने के लिए उपायों का निर्माण करता है, बल्कि इससे चीनी उन्हें कुछ हल करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

भारत और चीन के बीच विवाद के सबसे अहम कारण

1. **तिब्बत :** भारत व चीन के बीच तिब्बत, राजनीतिक व भौगोलिक तौर पर बफर का काम करता था। चीन ने 1950 में इसे हटा दिया। भारत तिब्बत को मान्यता दे चुका है, लेकिन तिब्बती शरणार्थियों के बहाने चीन इस मसले पर यदा-कदा नाक भौं सिकोड़ता रहता है।
2. **अक्साई चिन रोड :** लद्दाख इलाके में यह सड़क बना कर चीन ने विवाद का एक और मसला खड़ा किया है। चीन जम्मू-कश्मीर को भारत का अंग मानने में आनाकानी करता है, लेकिन पाक के कब्जे वाले कश्मीर को पाकिस्तान का भाग मानने में उसे कोई आपत्ति नहीं है।
3. **विवादित सीमा :** दोनों देशों के बीच करीब 3000 किमी की सीमा पर कोई स्पष्टता नहीं है। चीन जान-बूझ कर सीमा विवाद हल नहीं करना चाहता। वह सीमा विवाद को समय-समय पर भारत पर दबाव बनाने के लिए उपयोग करता है।
4. **अरुणाचल प्रदेश :** चीन पूरे अरुणाचल प्रदेश पर अपना दावा जताता रहा है। अरुणाचल में एक जल विद्युत परियोजना के लिए एशिया डेवलपमेंट बैंक से लोन लेने का चीन ने जम कर विरोध किया। अरुणाचल प्रदेश को विवादित बताने के लिए चीन वहां के निवासियों को स्टेपल वीजा देता है।
5. **ब्रह्मपुत्र :** चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर कई बांध बना रहा है और उसका पानी वह नहरों के जरिये उत्तरी चीन के इलाकों में ले जाना चाहता है। भविष्य में इस मसले का बड़ा विवाद बनने की आशंकाओं को ध्यान में रख भारत इस मसले को द्विपक्षीय बातचीत में उठाता रहा है।
6. **हिंद महासागर :** चीन ने पिछले कुछ वर्षों में हिंद महासागर में अपनी गतिविधियां काफी बढ़ा दी हैं। पाकिस्तान, म्यांमार व श्रीलंका के साथ साझेदारी में परियोजनाएं शुरू कर वह भारत को घेरने की रणनीति पर काम कर रहा है।
7. **पीओके :** पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित बालटिस्तान में चीनी गतिविधियां तेज हुई हैं। पूर्व सेना प्रमुख वीके सिंह ने खुद कहा कि इन इलाकों में तीन से चार हजार चीनी कार्यरत हैं, जिनमें पीएलए के लोग भी हैं।
8. **साउथ चाइना सी :** अपनी ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रख चीन साउथ चाइना सी इलाके में अपना प्रभुत्व कायम करने की कोशिशें कर रहा है। यहां उसे वियतनाम, जापान और फिलीपींस से चुनौती मिल रही है। हाल में उसने वियतनाम की दो तेल ब्लॉक परियोजनाओं में शामिल भारतीय कंपनियों को चेतावनी दी कि वह साउथ चाइना-सी से दूर रहें।

संभावित प्रश्न

''हाल ही में खत्म हुआ डोकलाम विवाद चीन-भारत संबंधों के विरोधाभासी आयामों की गतिरोध को परिलक्षित करता है, साथ ही यह दोनों देशों के बीच बेहतर संबंधो के महत्व को भी दर्शाता है।'' इस कथन के संदर्भ में दोनों देशों को आपसी संबंध बनाए रखने के लिए क्या अपेक्षित कदम उठाए जाने चाहिए? चर्चा कीजिए

705, IInd Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, New Delhi - 110009
Ph.: 011 - 27658013, 9868365322